Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय का सर्वांगीण चिन्तन

डॉ. जगदीश प्रसाद जाटः
एसोसिएट प्रोफेसर
स्वः लक्ष्मी कुमारी बधाला गर्ल्स पी.जी. कॉलेज गोविन्दगढ़
चौमूँ (जयपुरम्)

सारांश- भारत राष्ट्र के निर्माता महान् विभूतियों में स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम एक अमर चिरस्मरणीय महापुरुष के रूप में लिया जाता है, उनकी दूरदृष्टि के अंत्योदय के माध्यम से ही समग्र राष्ट्र ही नहीं, समग्र विश्व का सम्यक एवं पूर्णांग विकास हो सकता है।

हालांकि 'अंत्योदय' का अर्थ है - "समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय', जिसका सरल भावार्थ है पिछड़े लोगों को उत्थान करना। गरीबों और पिछड़े वर्गों को दूसरे वर्गों के समान लाना।

पिछड़ों के उत्थान के लिए विभिन्न प्रावधान

पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए तो भारत के संविधान में ही कई प्रावधान लागू किए गए हैं, अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के व्यक्तियों के लिए अनेक विशेष सुविधाएँ एवं रियायत प्रदान की गई है। आरक्षण व्यवस्था अनेकानेक क्षेत्रों में लागू है। आर्थिक लाभों से लेकर विभिन्न शिक्षा संस्थानों, प्रवेश परीक्षाओं, नौकरियों में उनके लिए निर्धारित अंकों की अर्हता सामान्य वर्गों से काफी रहती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय एवं प्रचलित व्यवस्था में अन्तर

पंडित दीन दयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय वर्तमान पिछड़े वर्गों के विकास के लिए चलाई जा रही आरक्षण व्यवस्था में आकाश पाताल का अन्तर है। इसलिए ही पिछड़ों का उत्थान सही रीति नहीं हो पा रहा है। गुणता तथा मेधा के क्षेत्र में अनुसूचित समुदाय के लोग सामान्य वर्गों से काफी पिछड़े हुए ही रहते हैं। बल्कि गुणवत्ता के मामले में इन समुदायों को लोग दिनों दिन और भी ज्यादा पिछड़ रहे हैं। लगता है वर्तमान व्यवस्था रही तो वे युगों युगों तक पिछड़े ही नहीं बने रहेंगे, बल्कि कहीं और भी ज्यादा पिछड़ते जाएँगे। भले ही आर्थिक या अन्य सुविधाओं के मामले में वे सामान्य वर्ग के बराबर या उनसे अधिक उन्नत क्यों ने हो जाएँ।

इसी बात को एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है - देश के एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री से किसी बच्चे ने एक प्रश्न पूछा था - "अनुसूचित वर्गों के लिए आरक्षण व्यवस्था कब तक लागू रहेगी?" उनका उत्तर था-- "जब तक वे दूसरे वर्गों के बराबर नहीं हो जाते।" इसके बाद बच्चे का प्रश्न था - "मेडिकल की प्रवेश परीक्षा तक में यदि जिस बच्चे को सिर्फ 40% अंक पाकर ही सीट मिल जाए, वह अव्वल आने के लिए प्रयास ही क्यों करेगा? अनुसूचित वर्ग के माँ-बाप भी यही कहते हैं कि उनके बच्चे अच्छे अंक हासिल करने के लिए ज्यादा प्रयास ही नहीं करते। इस प्रकार तो वे मेधा एवं गुणता की दृष्टि कभी भी सामान्य वर्ग के बराबर नहीं आ सकेंगे, बल्कि युगों तक पिछड़े ही बने रहेंगे। बल्कि और पिछड़ते जाएँगे। सुविधाभोगी बनकर हमेशा के लिए पिछड़े बने रहने का प्रयास करेंगे। अतः इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि "आरक्षण नीति" उन वर्गों को गुणता के मामले सदा-सदा के लिए पिछड़ा ही बनाए रखने के लिए बनाई गई है? उन वर्गों के लोगों को राजनीतिक लाभ के लिए हमेशा के लिए कमजोर बनाए रखने के लिए है?

इस पर पूर्व प्रधानमंत्री जी निरुत्तर हो गए थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अंत्योदय वर्तमान आरक्षण व्यवस्था के विपरीत सही मायने समाज के अंतिम पंक्ति के अर्थात गरीब से गरीब एवं पिछड़े से पिछड़े वर्गों को गुणवत्ता एवं मेधा के मामले में दूसरों के बराबर लाना था। यदि उनकी दृष्टि का अंत्योदय सही रीति लागू किया जाता तो आज देश फिर से "विश्वगुरु" का दर्जा पाता। हरेक नागरिक विश्व के अन्य देशों के लोगों की तुलना में अधिकाधिक गुणवान, विद्वान, वैज्ञानिक तथा अध्यात्मिक होता।

उनका अंत्योदय का विचार व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति के विविध आयामों का परिचायक था। पिछड़े वर्गों को विभिन्न सुविधाएँ प्रदान करना तो आवश्यक था ही, लेकिन गुणता के मामले में तथाकथित 'रियायत' प्रदान करके उन्हें मानसिक एवं बौद्धिक रूप से कमजोर व चिर -आलसी बनाकर और पतन के गर्त में धकेलना वे 'पाप' ही मानते थे।

उनका विचार था कि सृष्टि के आरम्भ में सभी मानवजाति समान थीं। कालक्रम में जातिप्रथा की कुरीति के प्रचलन के बाद "छुआछूत" की जो गलत धारा चल पड़ी, उसने समग्र समाज को पंगु बना दिया। अगड़ों और पिछड़ों के बीच बड़ी खाई पैदा हो गई। निचले वर्गों के लोगों पर उच्च वर्ग के लोगों द्वारा शोषण, अत्याचार होने लगे। जिससे समाज का पतन हुआ।

पं. दीनदयाल जी और जगन्नाथ संस्कृति

जिस प्रकार पुरी के जगन्नाथ मंदिर में कोई छुआछूत की परंपरा नहीं है। शूद्र, चण्डाल का जूठा प्रसाद की पण्डे पुजारी श्रद्धा से खाते हैं। सभी भगवान के समान भक्त हैं। इसी प्रकार पं. दीनदयाल जी समस्त मानव जाति को एक ईश्वर की संतान मानकर बराबर मानते थे। किसी के बीच कोई अंतर या भेदभाव नहीं करते थे। पिछड़े वर्गों का हर तरह से उत्थान करना चाहते थे। वर्तमान व्यवस्था की तरह कोरी सुविधाएँ, कोरी रियायतें मात्र प्रदान कर उनकी बौद्धिक अधोगति नहीं करना चाहते थे।

भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने के बाद से पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के विचारों, सिद्धान्तों एवं संकल्पों को साकार करने के लिए काफी कुछ प्रयास किए जा रहे हैं। कई संस्थानों के नाम उनके नाम पर रखा गया है, कई योजनाओं के नाम भी इन्हीं के नाम पर रखे गए, यथा- दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना। मुगलसराय रेलवे स्टेशन का नाम, आगरा हवाई अड्डे का नामकरण भी उनके नाम से बदला गया है।

सवाल उठना स्वाभाविक है कि कौन थे यह महान व्यक्ति? पण्डित दीनदयाल उपाध्याय महान चिन्तक और संगठनकर्ता थे। वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद जैसी प्रगतिशील विचारधारा दी। उपाध्यायजी नितान्त सरल और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके हिंदी और अंग्रेजी के लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। केवल एक बैठक में ही उन्होंने चन्द्रगुप्त नाटक लिख डाला था।

कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रतिभाशाली होता है उसने बचपन से प्रतिभा का अर्थ समझा होता है और उनके बचपन के कुछ किस्से ऐसे होते हैं जो उन्हें प्रतिभाशाली बना देते हैं। उनमें से एक हैं दीनदयाल उपाध्याय जिन्होंने अपने बचपन से ही जिन्दगी के महत्व को समझा और अपनी जिन्दगी में समय बर्बाद करने की अपेक्षा समाज के लिए नेक कार्य करने में समय व्यतीत किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, 1916 को ब्रज के मथुरा जिले के छोटे से गांव में हुआ था। 7 वर्ष की कोमल अवस्था में दीनदयाल माता-पिता के प्यार से वंचित हो गये। माता-पिता की मृत्यु के बाद भी उन्होंने अपनी जिन्दगी से मुंह नहीं फेरा और हंसते हुए अपनी जिन्दगी में संघर्ष करते रहे। उन्होंने तमाम बातों की चिंता किए बिना अपनी पढ़ाई पूरी की। उपाध्याय जी ने पिलानी, आगरा तथा प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की।

छात्र जीवन से ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। फिर प्रचारक बन गये। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी चाची के कहने पर धोती तथा कुर्ते में और अपने सिर पर टोपी लगाकर सरकार द्वारा संचालित प्रतियोगी परीक्षा दी। इसलिए लोग उन्हें 'पंडितजी' कहकर पुकारने लगे, जो उनका उपनाम बन गया। जिसे लाखों लोग बाद के वर्षों में उनके लिए सम्मान और प्यार से इस्तेमाल किया करते थे। इस परीक्षा में वे चयनित उम्मीदवारों में सबसे ऊपर रहे। वे सिविल सेवा परीक्षा में भी उतीर्ण हुए, फिर भी उसे त्याग दिया। विलक्षण बुद्धि, सरल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के स्वामी भारतीय राजनीतिक क्षितिज के

इस प्रकाशमान सूर्य ने भारतवर्ष में समतामूलक राजनीतिक विचारधारा का प्रचार एवं प्रोत्साहन करते हुए सिर्फ 52 साल की उम्र में अपने प्राण राष्ट्र को समर्पित कर दिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य भारत को विश्व-शक्ति नहीं, विश्वगुरु बनाने तथा देश खोई हुई सनातन संस्कृति को वापस है। राष्ट्रवादी, सामाजिक, राजनैतिक, युवा वर्गों के बीच में कार्य करने वाले, शिक्षा के क्षेत्र में, सेवा के क्षेत्र में, सुरक्षा के क्षेत्र में,अन्य कई क्षेत्रों में संघ परिवार के संगठन सक्रिय रहते हैं। भाजपा इसकी विचारधारा का राजनैतिक दल है। दीनदयाल जी इसी के कार्यकर्ता रहे और अंततः अध्यक्ष बने।

भारतीय अर्थव्यवस्था.- अंत्योदय से:

उनका विचार था -- "आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचे हुए व्यक्ति नहीं, बल की सबसे नीचे के स्तर पर विद्यावान व्यक्ति से होगा।" इसी के अनुसार उनकी अंत्योदय की दृष्टि परिव्याप्त होती है - हर हाथ को काम की संकल्पना के साथ।

दीनदयालजी को जनसंघ के आर्थिक नीति का रचनाकार बताया जाता है। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य समान्य मानव का सुख है यह उनका विचार था। इसमें साम्यवाद, पूँजीवाद, अन्त्योदय, सर्वोदय आदि मुख्य हैं। उनके शब्दों में- "भारत में रहनेवाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।" वसुधैव कुटुम्बकम् हमारी सभ्यता से प्रचलित है। इसी के अनुसार भारत में सभी धर्मो को समान अधिकार प्राप्त हैं।

"भारत जिन समस्याओं का सामना कर रहा ह, उसका मूल कारण इसकी 'राष्ट्रीय पहचान' की अपेक्षा है।" एकात्म मानववाद एक ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार मण्डलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा हुआ एक घेरा परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ एक घेरा -समाज, जाति, फिर राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रह्मांड को अपने में समाविष्ट किये है। इस अखण्डमण्डलाकार आकृति में एक घटक में से दूसरे फिर दूसरे से तीसरे का विकास होता जाता है। सभी एक-दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक दूसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी है। इनमे कोई संघर्ष नहीं है।

पं दीनदयाल उपाध्याय की परिकल्पना को साकार करने के लिए इस साल मई से 25 सितंबर तक सभी जिलों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। आवास विभाग द्वारा उनके नाम से अंत्योदय आवास योजना शुरू की गई है। इसमें नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लिए 2 साल में एक करोड़ आवास बनवाए जाएंगे। इसी के साथ प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में पं दीन दयाल उपाध्याय शोध पीठ की स्थापना की जा रही है।

उपाध्याय जी ने जो सिद्धांत दिया- अंत्योदय का, वह आज देश में प्रचलित है। पर आखिर में ,यह अंत्योदय क्या है? अंत्योदय मतलब आर्थिक रूप से कमज़ोर और पिछड़े वर्गों का उदय या विकास करने की क्रिया या भाव। अंत्योदय केवल उपाध्याय जी के द्वारा ही प्रतिष्ठित नहीं हुई परंतु वह एक भाग है बाकी अवधारणाओं का जैसे 'सर्वोदय' यानी सबका विकास।

दीनदयाल अंत्योदय योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। 'मेक इन इंडिया', कार्यक्रम के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक तथा आर्थिक बेहतरी के लिए कौशल विकास आवश्यक है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के तहत शुरू किया गया था। भारत सरकार ने इस योजना के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस योजना का लक्ष्य शहरी गरीब परिवारों कि गरीबी और जोखिम को कम करने के लिए उन्हें लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसर का उपयोग करने में सक्षम करना, जिसके परिणामस्वरूप मजबूत जमीनी स्तर के निर्माण से उनकी आजीविका में स्थायी आधार पर सराहनीय सुधार हो सके। इस योजना का लक्ष्य चरणबद्ध तरीके से शहरी बेघरों हेतु आवश्यक सेवाओं से लैस आश्रय प्रदान करने की परियोजनाएँ।

अंत्योदय योजना की मुख्य विशेषताए हैं:

कौशल प्रशिक्षण और स्थापन के माध्यम से रोजगार-मिशन के तहत शहरी गरीबों को प्रशिक्षित कर कुशल बनाने के लिए प्रति व्यक्ति 15 हजार रुपये का प्रावधान किया गया है, जो पूर्वोत्तर और जम्मू-कश्मीर के लिए प्रति व्यक्ति 18 हजार रुपये है। इसके अलावा, शहर आजीविका केंद्रों के जरिए शहरी नागरिकों द्वारा शहरी गरीबों को बाजारोन्मुख कौशल में प्रशिक्षित करने की बड़ी मांग को पूरा किया जाएगा।

सामजिक एकजुटता और संस्था विकास - इसे सदस्यों के प्रशिक्षण के लिए स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के गठन के माध्यम से किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक समूह को 10,000 रुपये का प्रारंभिक समर्थन दिया जाता है। पंजीकृत क्षेत्रों के स्तर महासंघों को 50, 000 रुपये की सहायता प्रदान की जाती है।

शहरी गरीबों को सब्सिडी - सूक्ष्म उद्यमों (माइक्रो- इंटरप्राइजेज) और समूह उद्यमों (ग्रुप इंटरप्राइजेज) की स्थापना के जरिए स्व-रोजगार को बढ़ावा दिया जाएगा। इसमें व्यक्तिगत परियोजनाओं के लिए 2 लाख रुपयों की ब्याज सब्सिडी और समूह उद्यमों पर 10 लाख रुपयों की ब्याज सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

शहरी निराश्रय के लिए आश्रय - शहरी बेघरों के लिए आश्रयों के निर्माण की लागत योजना के तहत पूरी तरह से वित्त पोषित है।

अन्य साधन - बुनियादी ढांचे की स्थापना के माध्यम से विक्रेताओं के लिए विक्रेता बाजार का विकास और कौशल को बढ़ावा और कूड़ा उठाने वालों और विसक्षमों आदि के लिए विशेष परियोजनाएँ।

इसी तरह राज्य सेक्टर में 166 पं दीन दयाल उपाध्याय मॉडल विद्यालयों का संचालन किया जाएगा। हर साल सभी जिलों के एक नगर पंचायत को मूलभूत सुविधाओं से लैस कर आदर्श नगर पंचायत बनाया जाएगा। पांच सालों में 375 आदर्श नगर पंचायतें बनाई जाएंगी। लोक निर्माण विभाग 3,084 गांवों को संपर्क मार्गों से जोड़ेगा।

"हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है, केवल भारत ही नहीं। माता शब्द हटा दीजिए तो भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा बनकर रह जाएगा।" इतना बड़ा नेता होने के बाद भी उन्हें जरा सा भी अहंकार नहीं था। 11 फरवरी, 1968 को मुगलसराय रेलवे यार्ड में वे मृत पाए गए, पर सच तो यह है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय सदैव अमर हैं।

सन्दर्भग्रन्थाः –

1. उ.प्र. संदेश सितम्बर 1991 पृष्ठ संख्या 40-65
2. भारत के वैभव का दीनदयाल मार्ग ह्य.ना.दी पृष्ठ संख्या 28-29
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक चिंतन पृष्ठ संख्या 29
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन पृष्ठ संख्या 58
5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनैतिक चिन्तन पृष्ठ संख्या 38
6. विजयवाड़ा अधिवेशन में दिया भाषण 1965
7. जनसंघ विशेषक आर्गनाइजर 1956
8. डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री, दीनदयाल उपाध्याय चिन्तन की प्रासंगिकता, प्रवक्ता.कॉम, 01.03.2018, पृष्ठ 3
9. शिवानन्द द्विवेदी, दीनदयाल उपाध्याय सिर्फ नाम नहीं बल्कि एक विचार है, जागरण सवेरा, 01.03.2018, पृष्ठ 2
10. महेश चन्द शर्मा, दीनदयाल उपाध्यायः कर्तव्य एवं विचार, प्रभात पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ 250-258
11. दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, प्रभात पब्लिकेशन, 2016, पृष्ठ 80-82
12. शरत अनन्त कुलकर्णी, एकात्म अर्थनीति, सुरूचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ 10-15